Volume-4, Issue-9, Sept-2015 • ISSN No 2277 - 8160

GLOBAL JOURNAL FOR RESEARCH ANALYSIS International

Research Paper | Hindi

Pant Kavya Ke Vividh Ayam
पंत काव्य के विविध आयाम

sushil kumar shelly

s.d college barnala k.c road barnala 148101

KEYWORDS :

सुमित्रानंदन पंत हिंदी काव्य के विकासशील कवि माने जाते हैं इनकी चिंतनशील प्रतिभा अपने युग तथा समाज से प्रभावित हो कर साहित्य के विविध आयामों के रूप में प्रकट होती हैं इन्होंने समय की परिवर्तित विचारधारा का सूक्षम अध्ययन करते हुए;उसकी प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति से अपने काव्य को युग जीवन के समीप ला दियॆ प्रथम रचना वीणा से लेकर कला और बूढा चांद तक में कवि जीवन की अनेक परिस्थितियों में प्रवेश करता हुआ व्यष्टि से समष्टि की ओर अग्रसर होता हैं पंत की सम्पूर्ण काव्य रचना को तीन आयामों में विभाजित किया जा सकता हैं

१. छायावादी विचारधारा (सन् १९१८ से १९३५ तक)
पंत की प्रारंभिक रचनाओं वीणा (१९१८), ग्रंथि (१९२०), पल्लव (१९२४), गुंजन (१९३०) को इसके अंतर्गत रखा जा सकता हैं इस युग में कवि की प्रेरणा प्रकृति रही हैं कवि स्वयं स्वीकार करता है कि - ' कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली हैं जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को हैं कवि जीवन से पहले मुझे याद है, मैं घण्टों एकान्त में बैठा प्राकृतिक दृश्यों को एक टक देखा करता था और कोई अज्ञात आकर्षण मेरे भीतर, एक अव्यक्त सौंदर्य दृश्यों का जाल बुनकर मेरी चेतना को तन्मय कर देता थां' प्रकृति प्रेम की यही भावना इस युग में कवि की अभिव्यक्ति का माध्यम रहीं इसी कारण कवि कभी प्रकृति को माँ, सहचरी के रूप में देखता है -

सिखा दो ना, मधुप कुमारि
मुझे भी अपने मीठे गान
कुसुम के चुने कटोरों से
करा दो न, कुछ कुछ मधुपान

तो कभी प्रकृति वर्णन में रहस्यात्मक भावना की अभिव्यक्ति करता है -

स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार
चकित रहता शिशु सा नादान
विश्व के पलकों पर सुकुमार,
विरचते हैं जब स्वप्न अजान
न जाने नक्षत्रों से कौन ;
निमंत्रण देता मुझ को मौन ? (मौन निमंत्रण)

तो कभी अपने चारों ओर देखता पलायन भाव से ग्रसित हैं लेकिन यह पलायन भी एकान्तप्रियता के कारण और प्राचीन के विरोध में उत्पन्न निराशा के कारण है -

स्पृहा संकोच का सुंदर समर,
अधर कम्पित कपोलों पर युगल
एक दुर्बल लालिमा में था बहा
विश्व विजयी प्रेम औ यह भीरुता

प्रकृति का सुकुमार यह कवि प्राकृतिक सौंदर्य पर मुग्ध होकर कहता है-

छोड द्रुमों की मृदु छाया
तोड प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल जाल में,
कैसे उलझा दूं लोचन ?

जड पदार्थों में मानवीय चेतना का आरोप कर छायावादी कवियों ने प्रकृति का मानवीकरण कर दियॆ पंत ने प्रकृति के विविध उकरणों में चेतना का आरोप कर अपनी विविध भावनाओं को अभिव्यक्ति दीं गंगा का वर्णन एक तापसी बाला के रूप में करते वह लिखते हैं -

शांत स्निग्ध ज्योत्सना उज्वल
प्रपलक अनन्त नीरज भूतल

पंत ने प्राचीन काल से आ रहे नारी विषयक विचारों से उठकर उसे उत्कृष्ट स्थान पर बिठाया हैं पंत की दृष्टि में नारी मात्र उपभोग की वस्तु न रहकर पुरुष के समान मानी गई हैं पंत नारी को मुक्त नभ में सांस लेने के पक्षधारी हैं इन्होंने नारी को माता, पत्नी, पुत्री रूप में देखा -

मुक्त करो नारी को मानव
चिर बंदिनी नारी को
युग-युग की बर्बर कारा से
जननी, सखी, प्यारी को

'वीणा' में पंत की प्रारम्भिक रचनाएं संग्रहित हैं इसमें प्रकृति प्रेम तथा मानव जीवन के लिए रहस्य भावना और जिज्ञासा की प्रमुखता हैं पंत की किशोर उल्लास काव्य रचना 'ग्रंथि' में असङ्ग ल प्रेम वेदना रूप में परिवर्ति हो गया हैं इसमें भाषा और भावों की अभिव्यक्ति में पर्याप्त प्रौढता हैं 'गुंजन' की कविताएं कल्पना, आत्म-चिंतन और लोक कल्याण की भूमियों पर विचरण करती हुई सुख दुख में समत्व स्थापित करती हैं कवि स्वयं स्वीकार करता है कि - ' मैं 'पल्लव' से 'गुंजन' में अपने को सुंदरम् से शिवम् की भूमि पर प्रदार्पण करते पाता हूं'

'पल्लव' पंत की प्रथम प्रौढ रचना कही जा सकती हैं विद्वानों ने 'पल्लव' की भूमिका को छायावाद का 'मेनिङ्गे स्टो' की संज्ञा दी हैं 'पल्लव' की कविताओं में वीणाकालीन प्राकृतिक अनुराग की भावना, सौंदर्य प्रधान हैं

उसके उस सरल पने से
मैंने था हृदय सजाया,
नित मधुर मधुर गीतों से
उसका उर था उकसाया,

'युगांत' में प्रणय गीतमाला का आग्रह छूटकर विचारात्मकता का आग्रह बलवान हो गयॆ अतः इस युग की कविताओं में प्रकृति और सौंदर्य के प्रति जो सरल उल्लास है; वह अन्य किसी कवि में नहीं हैं इस तरह वीणा से लेकर युगांत तक की रचनाओं में पंत प्रकृति प्रेम, रहस्यानुभूति, प्रतीक विधान, आशा-निराशा, हर्ष-शोक, चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता का सुंदर समावेश हुआ हैं

२. प्रगतिवादी विचारधारा (सन् १९२६ से १९४४) 'युगांत' से 'ग्राम्या' तक आकर कवि व्यक्तिगत प्रेम को त्यागकर उसे सामाजिक प्रयत्न देने का सङ्ग ल प्रयत्न करता है और पूँजीवाद को साम्यवादी कल्याण भावना के कारण स्वीकार नहीं करतॆ १९२८ में उन्होंने 'रूपाभ'नामक प्रगतिशील मासिक पत्र भी निकाला ॆ शमशेर, रघुपति सहाय आदि के साथ वह प्रगतिशील लेखक संघ से भी जुडे रहें इसी समय में वे छायावादी युगीन भावनाओं - प्रकृति प्रेम, प्रेम का उन्मुक्त वर्णन, विस्मय की भावना, कल्पना का अतिरेक आदि को त्यागकर अपनी चेतना को यथार्थ बना लेते हैं

सत्य अहिंसा से आलोकित होगा मानव का मन ?
अमर प्रेम का मधुर स्वर्ग बन जायेगा जग जीवन ?
आत्मा की महिमा से मण्डित होगी नव मानवता ?

कवि हिंसा और अहिंसा के मध्य संदेहाकुल दृष्टि से देखता हैं वह क्रांति की भावना की उन्मुक्त अभिव्यक्ति नहीं करता किन्तु वह गांधी के अहिंसावादी दृष्टिकोण को भी नहीं अपना सकॆ 'युगवाणी' में वह मार्क्स के प्रति आस्था प्रकट किए बिना नहीं रह सका -

धन्य मार्क्स ! चिर तगच्छन्न पृथ्वी के उदय शिखर पर,
तुम त्रिनेश के ज्ञान चक्षु से प्रकट हुए प्रलयंकरॆ

सामाजिक-आर्थिक वर्ग संघर्ष का चित्रण, धर्म व इश्वर आदि के प्रति आनास्था, नवीन जीवन मूल्यों की स्थापना, साम्राज्यवाद का विरोध ये सब विशेषताएं 'युगांत', 'युगवाणी', 'ग्राम्या' में मिलती हैं पंत 'ताज' कविता के विद्रोही स्वर में कहते हैं -

हाय ! मृत्यु का ऐसा अमर, अपार्थिव पूजन ?
जब विषण्ण निर्जीव पडा हो जग का जीवनॆ

ग्राम्या' भारतीय ग्रामों की गीता हैं कवि के अपने शब्दों में - 'इसमें ग्रामीणों के प्रति बौद्धिक सहानुभूति ही मिल सकती हैं' इसमें भारतीय ग्रामों की समस्याओं, परिस्थितियों तथा ग्रामीण जनता का यथार्थ वर्णन है -

यह तो मानव लोक नहीं रे यह है नरक अपरिचित
यह भारत का ग्राम, सभ्यता, संस्कृति से निर्वासित

३. आध्यात्मिक विचारधारा (१९४४ के बाद) अरविन्द दर्शन अंतर्मन की साधना, जीवन दर्शन से प्रभावित पंत ने बाद के काव्य में मानवतावाद को अभिव्यक्त कियॆ अरविन्द के प्रति श्रद्धा के कारण ही उन्होंने स्वर्णधूलि के एक गीत में अपनी श्रद्धांजलि प्रकट की

श्री अरविंद , सभक्ति प्रणाम
स्वमानस के ज्योतित सरसिज

स्वर्ण किरण ,स्वर्णधूलि, उत्तरा तथा युगपथ ये सब आध्यात्मिक चेतना से भरे हुए हैं पंत का आध्यात्मवाद ,मनोवैज्ञानिक आध्यात्मवाद है, जो अंतर्चेतना के आधार पर मानवता के विकास के लिए अग्रसर है

सामाजिक जीवन से कहीं महत् अंतर्मन , वृहत् विश्व इतिहास ;चेतना जीता किन्तु निरन्तर (स्वर्ण किरण) पंत के लिए स्पष्ट प्रकृति नश्वर नहीं है , यह आध्यात्मिक सत्ता का रूप है

नष्कर्ष : निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि इनका सम्पूर्ण जीवन सत्यम् , शिवम् ,सुन्दरम् , के आदर्शों से प्रभावित होते हुये भी समय के साथ निरन्तर चलता रहा हैं जहाँ आरम्भिक रचनाओं में प्रकृति के रमणीय चित्र मिलते हैं वहीं दूसरे चरण की रचनाओं में प्रगतिवाद और विचारशीलता का आग्रहॆ जीवन के सबसे बाद की रचनाओं में अरविंद दर्शन और मानवतावाद की भावनाएँ

REFERENCES

. सुमित्रानंदन पंत का नवचेतना काव्य , नेमानारायण जोशी , एस. चन्द एण्ड कम्पनी (प्रा. लमिटिड) , वाम नगर , नई दिल्ली -५५ 2. पंत काव्य में सौदर्य भावना , डॉ. अन्नपुरेड्डी श्री रामरेड्डी , हिंदी साहित्य भण्डार , चौपडियां रोड, लखनऊ- ३ , प्रथम संस्करण - १९७६ 3. पंत की काव्य साधना , विनय कुमार शर्मा , हिंदी साहित्य संसार , दिल्ली , १९६२ 4. सुमित्रानंदन पंत , डॉ. नगेन्द्र , साहित्य रत्न भण्डार , संस्करण दसवां-१९६२ 5. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास , रामस्वरूप चतुर्वेदी , लोकभारती प्रकाशन , इलाहबाद , प्रथम संस्करण - १९८६